16

इन्द्रसूक्त

शब्दराशि और ज्ञान का खजाना वेद है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद चार प्रकार से विभक्त वेद है। प्रत्यक्ष प्रमाण से अथवा अनुमान से जो विषय नहीं जाना जाता है उसका ज्ञान वेद से होता है। अर्थात् वेद शब्द प्रमाण है। मनुष्यों का सुख किस अलौकिक उपाय से हो सकता है इसका ज्ञान वेद कराता है। वेद में अनेक देवताओं की स्तुति की गई है। उनमे इन्द्र देव का प्रधान रूप से यजन किया गया है। इन्द्र की स्तुति जिस सूक्त में वह यह इन्द्रसूक्त है।

इन्द्रसूक्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जैसे अग्निसूक्त में अग्नि की स्तुति की गई वैसे ही इन्द्रसूक्त में भी इन्द्र के महत्व का वर्णन किया गया है। इन्द्रसूक्त में विद्यमान मन्त्रोरध में इन्द्र का पराक्रम देखा जाता है। इस सूक्त का ऋषि हिरण्यस्तूप, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं। इन्द्र ऋग्वेद में सबसे अधिक लोग प्रिय महत्त्वपूर्ण देवता है। ऋग्वेद में २५० सूक्तों में इन्द्र का स्तुति स्वतन्त्ररूप से किया गया है। और ५० सूक्तों में अन्य देवताओं के साथ भी स्तुति की गई है। इसी प्रकार ऋग्वेद में प्राय: चतुर्थ अंश इन्द्र का ही गुण वर्णन किया गया है। जैसा अग्नि और सूर्य यथाक्रम पृथिवीलोक में और द्युलोक में स्वामी हैं, वैसे ही इन्द्र भी अन्तरिक्षलोक में स्वामी है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढकर आप सक्षम होंगे :

- इन्द्रसूक्त को जान पाने में;
- इन्द्र के महत्व को जान पाने में;
- इन्द्र की कीर्ति को जान पाने में;
- मनुष्यों की रक्षा के लिये इन्द्र के विषय में जान पाने में;

- इन्द्रसूक्त में विद्यमान वैदिक शब्दों का प्रयोग जान पाने में;
- लौकिक वैदिक प्रयोग के मध्य में भेद कर पाने में;
- वेद में विविध स्वरों के प्रयोग में जान पाने में।

16.1 अब मूलपाठ को पढेंगे

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम्॥१॥

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः॥२॥

वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥३॥

यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः।
आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ॥४॥

अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णाहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः॥५॥

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम्।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुज्जानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः॥६॥

अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान।
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः॥७॥

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः।
याश्चिद्वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत्तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव॥८॥

नीचावया अभवद्वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीदानुः शये सहवत्सा न धेनुः॥९॥

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः॥१०॥

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।
अपां बिलमपिहितं यदासीद्वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार ॥११॥

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।
अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्॥१२॥

नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये ॥१३॥

अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत्।
नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि ॥१४॥

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव ॥१५॥

16.1.1 मूलपाठ की व्याख्या

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत्पर्वतानाम्॥१॥

पदपाठ- इन्द्रस्य। नु। वीर्याणि। प्र। वोचम्। यानि। चकार। प्रथमानि। वज्री॥अहन्। अहिम्। अनु। अपः। ततर्द। प्र। वक्षणाः। अभिनत्। पर्वतानाम्॥१॥

अन्वय - नु इन्द्रस्य वीर्याणि प्रवोचं यानि वज्री प्रथमानि चकार। अहिम् अहन्, अनु अपः ततर्द। पर्वतानां वक्षणा अभिनत्।

व्याख्या - हे विद्वान मनुष्यों तुम लोग जैसे सूर्य के उन प्रसिद्ध पराक्रम को कहते हो उनको मैं भी शीघ्र कहुं। बिजली जैसे स्वर्ण युक्त शस्त्र को इंद्र ने धारण किया। सबसे पहले इन्द्र ने ही विष्णु के समान पराक्रमों युक्त कर्म किये। उस इन्द्र के पराक्रमों को विशेष रूप से बताते हैं। वह सूर्यरूपी इन्द्र दिन में नागरुपी बादलों को मारता है। वह ही एक पराक्रमी इन्द्र है। और उसी ने जल रूपी बादलों को मारा वह इन्द्र का दूसरा कार्य है। पर्वतों के द्वारा पुष्ट करने वाली प्रवहणशील नदियों को बहाता है अर्थात नदियों के किनारे को बहाने वाला यह सूर्य रूपी इन्द्र का तीसरा कार्य है। इसी प्रकार आगे भी देखना चाहिए।

सरलार्थ - इस मन्त्र में इन्द्र के पराक्रम युक्त कार्यों का वर्णन किया गया है। प्रथम उस इन्द्र ने मेघ को मारा। दूसरा जल को भूमि पर गिराना। और तीसरा वर्षा द्वारा पर्वतों को खण्डित किया। इस प्रकार नदियों के जाने के लिए मार्ग की रचना की। उस मार्ग से नदियाँ प्रवाहित होती है।

व्याकरण

- **वीर्याणि** - वीर्-धातु से यति प्रत्यय करने पर वीर्यम् यह रूप बनता है। उसका प्रथमा बहुवचन में वीर्याणि यह रूप है।
- **वोचम्** - वच्-धातु से लुङ्मूल लेट् उत्तमपुरुष एकवचन में यह रूप बनता है।

- **अहन्** – हन्-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **चकार** – कृ-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **ततर्द** – तृद्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **अभिनत्** – भिद्-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष।
वाश्रा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः॥२॥

पदपाठ- अहन्। अहिम्। पर्वते। शिश्रियाणम्। त्वष्टा। अस्मै। वज्रम्। स्वर्यम्। ततक्ष॥ वाश्राःइव। धेनवः। स्यन्दमानाः। अञ्जः। समुद्रम्। अव। जग्मुः। आपः॥२॥

अन्वय – (इन्द्रः) पर्वते शिश्रियाणम् अहिम् अहन्। त्वष्टा अस्मै स्वर्यं वज्रं ततक्ष। वाश्राः धेनवः इव स्यन्दमाना आपः अञ्जः समुद्रम् अव जग्मुः।

व्याख्या – पर्वत में रहने योग्य आश्रित अहि मेघ को मरता है। इस इन्द्र के लिए गर्जनशील प्रेरणा के योग्य जब शब्दों से स्तुति करके त्वष्टा विश्वकर्मा वज्र को छोड़ते हैं। उस वज्र के द्वारा मेघ के भिन्न होने पर चलते हुए प्रस्रव युक्त जल समुद्र को अच्छी प्रकार से प्राप्त करता है। वहाँ दृष्टान्त है। गाय जिस प्रकार बछड़े की ओर रम्भाती हुई भागती है वैसे ही नदियाँ कोलाहल करती हुई समुद्र को प्राप्त होती है।

सरलार्थ – पर्वत में रहने योग्य आश्रित मेघों को इन्द्र ने मारा। उससे विश्वकर्मा ने गर्जना करने वाले वज्र का निर्माण किया। उस वज्र से मेघ के भिन्न होने पर शब्द करती हुई गाय के समान जल शीघ्र समुद्र की और जाता है।

व्याकरण

- **शिश्रियाणम्** – श्रि-धातु से लिड्र्थ में कानच इयङ आदेश होने पर नकार को णत्व करने पर शिश्रियाणम् यह रूप बनता है।
- **स्वर्यम्** – सुपूर्वक ऋ-धातु से ण्यत करने पर स्वर्यम् यह रूप बनता है। अथवा स्वृ (शब्दोपनापयोः) इससे ण्यत करने पर स्वर्यम् यह रूप बनता है।
- **ततक्ष** – तक्ष्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में ततक्ष यह रूप बनता है।
- **स्यन्दमानाः** – स्यन्द्-धातु से शानच करने पर स्यन्दमाना यह रूप बनता है।
- **जग्मुः** – गम्-धातु से लिट् प्रथमपुरुषबहुवचन में यह रूप बनता है।

वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम् ॥३॥

टिप्पणियाँ

पदपाठ- वृषऽयमाणः। अवृणीत। सोमम्। त्रिऽकद्रुकेषु। अपिबत्। सुतस्य॥आ। सायकम्। मघऽवा। अदत्त। वज्रम्। अहन्। एनम्। प्रथमऽजाम्। अहीनाम् ॥३॥

अन्वय - वृषायमाणः सोमम् अवृणीत। त्रिकद्रुकेषु सुतस्य अपिबत्। मघवा सायकं वज्रम् आ अदत्त, अहीनां प्रथमजाम् एनम् अहन् ॥३॥

व्याख्या - वीर्य्य वृद्धि का आचरण करते हुए इन्द्र ने सोम को स्वीकार करता है। त्रिकद्रुक याग में ज्योति, गाय, आयु इन तीनों नाम का याग त्रिकद्रुक कहलाता है। इससे उत्पन्न हुए जगत का जिसकी उत्पति स्थिति और प्रलय तीनों को बताने वाले इन्द्र ने सोमरस का अंश पिया। यह बहुत सा धन दिलवाने वाला इन्द्र ने शास्त्र रूपी सूर्य किरणों से मेघ को मारा।

सरलार्थ - बलवान बैल के समान आचरण करते हुए इन्द्र ने अपने प्रिय आहार के लिए सोम को ग्रहण किया। और ज्योति आदि तीन यज्ञों में स्नानीय सोम को पिया। धनवान इन्द्र ने वज्र को स्वीकार किया। और उस वज्र से मेघों में प्रथम प्रकट हुए मेघ को मारा।

व्याकरण

- **वृषायमाणः** - वृष इव आचरन् इस अर्थ में क्यङ, दीर्घ शानचऔर मुगाग करने पर वृषायमाणः यह रूप बनता है।
- **सायकम्** - षिञ्-धातु से ण्वुल अक आदेश करने पर वृद्धि ऐकार होने पर और उसको आया आदेश होने पर नकार को णकार करने पर सायकम यह रूप है।
- **मघवा** - मघः अस्य अस्तीति वतुप करने पर मघवत् इसका प्रथमा एकवचन में मघवा यह रूप है।

यदिन्द्राहन्प्रथमजामहीनामान्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः।
आत्सूर्यं जनयन्द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ॥४॥

पदपाठ- यत्। इन्द्र। अहन्। प्रथमऽजाम्। अहीनाम्। आत्। मायिनाम्। अमिनाः। प्र। उत। मायाः॥आत्। सूर्यम्। जनयन्। द्याम्। उषसम्। तादीत्ना। शत्रुम्। न। किल। विवित्से ॥४॥

अन्वय - उत इन्द्र! यत् अहीनां प्रथमजाम् अहन्, आत् मायिनां मायाः प्र अमिनाः, आत् सूर्यम् उषसं द्यां जनयन् तादीत्ना किल शत्रुं न विवित्से ॥४॥

व्याख्या - तब भी और जब इन्द्र ने अवश्य वध करने योग्य शत्रुओं में मेघों के मध्य में प्रथम उत्पन्न मेघ को मारा, और उसके बाद मायावी निशाचरों को उनकी सम्पूर्ण माया के साथ अच्छी प्रकार से नाश किया। और उसके बाद सूर्य, उषा, द्यौ और आकाश को उत्पन्न करके अन्धकार और मेघ को हटा करके प्रकाश किया। तभी तुम अपने राष्ट्र में निश्चय रूप से शत्रुओं को भी नहीं प्राप्त कर सकेंगे।

सरलार्थ – इस मन्त्र में इन्द्र को प्रति का गया है की हे इन्द्र तुम मेघों में प्रथम उत्पन्न को मारा, उसके बाद मायावी राक्षसों को मारा। और उसके बाद सूर्य को, उषःकाल को, और आकाश निर्माण किया। इस प्रकार निश्चय के द्वारा किसी के भी शत्रु नहीं रहते हैं।

व्याकरण

- **मायिनाम्** – मायाशब्द से तदस्यास्ती इस अर्थ में इनिप्रत्यय करने पर मायिन् यह हुआ उसका षष्ठीबहुवचन में मायिनाम्।
- **अहन्** – हन्–धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में अहन् यह रूप बनता है।
- **अमिनाः** – मी–धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में अमिनाः यह रूप बनता है।
- **जनयन्** – जन्–धातु से शतृप्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में जनयन् यह रूप है।
- **विवित्से** – विद्–धातु से आत्मनेपद लिट् मध्यमपुरुष एकवचन में विवित्से यह रूप है।

अहन्वृत्रं वृत्रतरं व्यंसमिन्द्रो वज्रेण महता वधेन।
स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णाहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः।।५।।

पदपाठ- अहन्। वृत्रम्। वृत्रऽतरम्। विऽअंसम्। इन्द्रः। वज्रेण। महता। वधेन ।।स्कन्धांसिऽइव। कुलिशेन। विऽवृक्णा। अहिः। शयते। उपऽपृक्। पृथिव्याः।।५।।

अन्वय – इन्द्रः महता वधेन वज्रेण वृत्रम् अहन् वृत्रतरं व्यंसम् (अहन्)। कुलिशेन स्कन्धांसि विवृक्णा इव अहिः पृथिव्याः उपपृक् शयते ।।५।।

व्याख्या – यह इन्द्र वज्र से सम्पादित जो महान् वज्र है उससे वज्र से आकाश को घेर लेने वाले बादलो को बड़े भरी वज्र से प्रहार करता है। अथवा वृत्र के द्वारा आवरण जो सभी शत्रु की रक्षा करता है उस वृत्र इस नाम वाले को शत्रु हन्ता इन्द्र ने विविध सेनाओं से युक्त अधिक शक्तिशाली वृत्र का नाश किया। यहाँ पर यह दृष्टान्त है। कुल्हाड़ी से जिस प्रकार वृक्ष काट दिया जाता है उसी प्रकार इन्द्र ने मेघ को मारा। और अहि, वृत्रपृथ्वी के ऊपर सदा के लिए सोये अथवा कटी हुई लकड़ी के समान भूमि पर गिरे।

सरलार्थ – इन्द्र ने बड़े वज्र से वृत्र को मारा। उसे बाद भी वृत्र से भयंकर व्यंसनाम के राक्षस को मारा। जैसे कुल्हाड़ी से काटी गई वृक्ष की शाखा भूमि पर गिरती है, वैसे ही राक्षस पृथिवी के समीप अथवा उसकी गोद में हमेशा के लिए सोये।

व्याकरण

- **वृत्रतरम्** – अतिशयने वृत्रम् इस अर्थ में तरप करने पर वृत्रतरम् यह रूप है। अथवा वृत्रैः तरति इससे वृत्रतरम् बनता है।

टिप्पणियाँ

- **व्यंसम्** – विगतौ अंसौ यस्य तम् यहाँ बहुव्रीहि समास है।
- **वधेन** – वधः येन स वधः, उससे यहाँ पर तृतीया तत्पुरुष समास है।
- **विवृक्णा** –विपूर्वकव्रश्च् धातु से क्तप्रत्यय करने पर विवृक्ण यह रुप बनता है। उसका प्रथमाबहुवचन में वैदिकरूप विवृक्णा है।

पाठगत प्रश्न 16.1

1. इन्द्रसूक्त का ऋषि कौन, छन्द क्या, और देवता कौन है?
2. इन्द्र का प्रथमपराक्रम क्या था?
3. इन्द्र का तृतीयपराक्रम क्या था?
4. वाश्राः इसका क्या अर्थ है?
5. शिश्रियाणम् इसका क्या अर्थ है?
6. वृषायमाणः इसक क्या अर्थ है?
7. प्र अमिनाः इसका क्या अर्थ है?
8. विवृक्णा इस रूप को सिद्ध करो?
9. महता वधेन इस मन्त्र अंश में वध शब्द का क्या अर्थ है?
10. विवृक्णा इसका क्या अर्थ है?

16.1.2 अब मूलपाठ को जानेंगे

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम्।
नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः॥६॥

पदपाठ – **अयोद्धाऽइव। दुःऽमदः। आ। हि। जुह्वे। महाऽवीरम्। तुविऽबाधम्। ऋजीषम् ।।न। अतारीत्। अस्य। सम्ऽऋतिम्। वधानाम्। सम्। रुजानाः। पिपिषे। इन्द्रऽशत्रुः॥६॥**

अन्वय – दुर्मदः महावीरं तुविबाधम् ऋजीषम् अयोद्धा इव हि आ जुह्वे। अस्य बधानां समृतिं न अतारीत्। इन्द्रशत्रुः रुजानाः सं पिपिषे।

व्याख्या – बुरे, पापमय मद, भोग, विलास से तृप्त रहने वाला वृत्र बिना युद्ध की इच्छा वाले इन्द्र को लड़ना न जानने वाले अकुशल के समान युद्ध में ललकारा। किस प्रकार के इन्द्र को? महावीर गुण के द्वारा महान होकर शौर्य से युक्त अनेक शत्रुओं को पीटने में समर्थ, उत्तम गुण

उत ऐश्वर्य युक्त धर्मात्मा नीतिमान को। इस प्रकार के इन्द्र के संबन्धि जो शत्रुवध शस्त्र है उन शस्त्र-अस्त्र के एक साथ आने वाले प्रहार को पार कोई नहीं कर सकता। इन्द्र शत्रु जिस वृत्र का उस प्रकार का वृत्र इन्द्र के हाथों से मरकर नदियों में गिरता हुआ उन नदियों को पूर्ण रूप से भर देता है। वृत्रदेह के गिरने से नदियाँ विक्षुब्ध हो जाती है और उससे तट पर स्थित पत्थर आदि का चूर्ण हो जाता है।

सरलार्थ - मद से युक्त वृत्र ने अनेक गुणों से सम्पन्न वीर अनेक शत्रुओं को मारने वाले इन्द्र को अकुशल योद्धा के समान ललकारा। परन्तु वृत्र उसको शस्त्र से मारने में असमर्थ और इन्द्र के ही वज्र से मारा गया। और उसने नदियों को पूर्ण किया।

व्याकरण

- **अयोद्धा** - न योद्धा इति अयोद्धा यहाँ पर नञ्तत्पुरुष समास। अथवा न विद्यते योद्धा अस्य सः अयोद्धा यहाँ पर बहुव्रीहिसमास है।
- **दुर्मदः** - दुष्टः मदः यस्य सः यहाँ पर बहुव्रीहि समास है।
- **तुविबाधम्** - तुवीन् बाधते इस अर्थ में अच्प्रत्यय करने पर तुविबाध यह रूप है। उसका द्वितीया एकवचन में तुविबाध या रूप है।
- **समृतिम्** - सम्पूर्वक ध्-धातु से क्तिन्प्रत्यय करने पर।
- **रुजानाः** - रुज्-धातु से शानच्प्रत्यय करने पर रुजान यह है। रुजानि कूलानिइति रूजानाः नद्यः।
- **पिपिषे** - आत्मनेपद पिष्-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **अतारीत्** - तृ-धातु से लुङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **इन्द्रशत्रुः** - इन्द्रः शत्रुः यस्य सः यहाँ बहुव्रीहिसमास है।

अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रमधि सानौ जघान।
वृष्णो वध्रिः प्रतिमानं बुभूषन्पुरुत्रा वृत्रो अशयद्व्यस्तः॥७॥

पदपाठ- अपात्। अहस्तः। अपृतन्यत्। इन्द्रम्। आ। अस्य। वज्रम्। अधि। सानौ। जघान ॥ वृष्णः। वध्रिः। प्रतिऽमानम्। बुभूषन्। पुरुऽत्रा। वृत्रः। अशयत्। विऽअस्तः॥७॥

अन्वय - अपात् अहस्तः इन्द्रम् अपृतन्यत्। अस्य सानौ अधि वज्रम् आ जघान। वृष्णः प्रतिमानं बुभूषन् वध्रिः वृत्रः पुरुत्रा व्यस्तः अशयत् ॥७॥

व्याख्या - वज्र से पैर के छिन्न होने से और हाथ के छिन्न होने से हाथ रहित वृत्र ने इन्द्र को उद्दिश्य करके सेना सहित युद्ध करने की इच्छा की। द्वेष की अधिक होने से अनेक प्रकार से भंग होने पर भी युद्ध को नहीं छोड़ता यह अर्थ है। इस हाथ पैर रहित वृत्र के पर्वत के समान

टिप्पणियाँ

उसके भारी कंधो पर वज्र को विशेष रूप से मारा इन्द्र ने समुख होकर के फैंका। बिना शक्ति के भी युद्ध की इच्छा करता है। बधिया बैल के समान निर्बल पुरुष भी सांढ के समान बलवान पुरुष से मुकाबला करना चाहता है, अनेक स्थानों पर पछाड़ खाकर के परास्त होकर के भूमि पर गिर जाता है उसी प्रकार यह है। वह वृत्र अनेक भागों से पीटता हुआ भूमि पर गिरा।

सरलार्थ-पादरहित और हाथ रहित वृत्र ने इन्द्र के प्रति युद्ध के लिए इच्छा की। तब इन्द्र ने पर्वत शिखर के तुल्य कन्धो पर वज्र से प्रहार किया। पुनः बैल के समान जाने की इच्छा करता हुआ निर्बल बंधिया बैल के समान अथवा निर्बल मनुष्य के समान वृत्र भूमि पर गिरा।

व्याकरण

- **अपात्** - न पादौ यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **अहस्तः** - न हस्तौ यस्य सः (बहुव्रीहि)।
- **अपृतन्यत्** -पृतना शब्द से क्यच्प्रत्यय करने पर पृतन्य यह होता है, उसी का लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **प्रतिमानम्** -प्रतिपूर्वक मा-धातु से ल्युट् प्रत्यय करने पर प्रतिमानम् यह रूप है।
- **बुभूषन्** - भवितुम् इच्छति इस अर्थ में सन करने पर प्रथमा एकवचन में यह रूप है।
- **पुरुत्रा** - पुरु इससे सप्तमी अर्थ में त्रा प्रत्यय करने पर पुरुत्रा यह रूप बनता है।

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः।
याश्चिदवृत्रो महिना पर्यतिष्ठत्तासामहिः पत्सुतःशीर्बभूव॥८॥

पदपाठ- नदम्। न। भिन्नम्। अमुया। शयानम्। मनः। रुहाणाः। अति। यन्ति। आपः ।याः। चित्। वृत्रः। महिना। परिऽअतिष्ठत्। तासाम्। अहिः। पत्सुतःऽशीः। बभूव॥८॥

अन्वय - मनः रुहाणाः आपः भिन्नं नदं न अमुया शयानम् अति यन्ति। वृत्रः महिना याश्चित् पर्यतिष्ठत्, अहिः तासां पत्सुतःशीः बभूव।

व्याख्या - जल धाराएं जिस प्रकार प्रजाओं के चित पर चढ़ी, अत्ति चिताकर्षक होकर इस पृथ्वी के साथ सोये हुए प्रशांत महासागर को जा मिलती है उसी प्रकार सेनाएं भी मनोरथ पर चढ़ी हुई इस पृथ्वी के ऊपर सोते हुए टूटे फूटे देह को प्राप्त होती है। वहाँ पर दृष्टान्त है। अनेक भिन्न भिन्न तटों वाली नदियां सिन्धु के समान नहीं होती हैं। जैसे वृष्टिकाल में बहुत जल नदी के तटों को तोड़कर अतिक्रमण करके जाता है उसी प्रकार। किस प्रकार का जल। मन को चिताकार्षक होकर रहता है। पहले वृत्र के जीवित होने पर उसके द्वारा रुका हुआ मेघ स्थित जल भूमि पर वर्षा नहीं करता है, उस समय लोगों का मन दुखी होता है। वृत्र के मरने पर विरोधरहित जल वृत्र शरीर का उल्लङ्घन करके बहता है। तब वृष्टिलाभ से मनुष्य संतुष्ट होते है। उसका स्पष्ट रूप से उल्लेख करते हैं। वृत्र ने अपने जीवन काल में अपनी महिमा से जो मेघ में आया हुआ

जल था उसको वही पर रोक दिया, अहि वृत्र मेघ उस जल का स्वामी युद्ध में पछाड़ खाकर गिरा। यद्यपि जल के पैर नहीं है, फिर भी वृत्र को लाघने से पैरों तले रोंधा यह आशय है।

सरलार्थ- मनुष्यों के मनोहारि वर्षा जैसे वृष्टिकाल में कभी नदी का अतिक्रमण करके जाती है वैसे ही पृथिवी पर जल वृत्र के शरीर को अतिक्रमण करके गिरता है। वृत्र ने अपनी महिमा से जो जल अवरुद्ध किया अब वह ही जल उसके शरीर का उल्लङ्घन करके जाता है यह अर्थ है।

व्याकरण

- **भिन्नम्** - भिद्-धातु से क्तप्रत्यय करने पर उसको न आदेश होने पर भिन्नम् यह रूप है।
- **अमुया** - अमुष्याम् इस अर्थ में याच्प्रत्यय करने पर अमुया यह रूप है।
- **रुहाणाः** - रुह-धातु से शानच्प्रत्यय करने पर यह रूप है।
- **महिना** - मह-धातु से इन्प्रत्यय करने पर महिन् यह हुआ उसी का तृतीया एकवचन में वैदिकरूप है।
- **पत्सुतःशीः** - पादेषु इस अर्थ में पाद शब्द को पद आदेश होने पर पत्सु यह हुआ सप्तमी अर्थ में तसिल्प्रत्यय करने पर विभक्ति लोप अभाव में पत्सुतः यह रूप है। पत्सुतः शेते इस अर्थ में क्विप करने पर पत्सुतःशीः यह रूप हुआ।
- **बभूव** - भूधातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **पर्यतिष्ठत्** - परि उपसर्ग पूर्वक स्था-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।

नीचावया अभवद्वृत्रपुत्रेन्द्रो अस्या अव वधर्जभार।
उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद्दानुः शये सहवत्सा न धेनुः॥९॥

पदपाठ- नीचाऽवयाः। अभवत्। वृत्रऽपुत्रा। इन्द्रः। अस्याः। अव। वधः। जभार ॥ उत्ऽतरा। सूः। अधरः। पुत्रः। आसीत्। दानुः। शये। सहऽवत्सा। न। धेनुः॥९॥

अन्वय - वृत्रपुत्रा नीचावया अभवत्। इन्द्रः अस्या अव बधः जभार। सूः उत्तरा पुत्र अधर आसीत्। दानुः सहवत्सा धेनुः न शये ॥९॥

व्याख्या - वृत्र पुत्र है जिस माता का वह माता वृत्र पुत्रा कहलाती है, अन्तरिक्ष को ढ़ंक लेने वाले मेघ को पुत्र के समान उत्पन्न करने वाली अन्तरिक्ष भूमि भी जल को नीचें गिरा देती है मानो स्वयं मरती जाती है तब ऊपर की अन्तरिक्ष माता ऊपर ही रहती है और उसका पुत्र मेघ नीचे गिरता है तब बछड़े सहित गाय के समान वह खण्डित वृत्र माता के नीचे ही गिरा रहता है। उस समय इस इन्द्र ने इस माता के नीचे वाले भाग में वृत्र के ऊपर मारने की इच्छा से प्रहार किया। उस समय माता ऊपर थी। पुत्र तो नीचें था। और वह सेना खण्डित बल होकर नीचे गिर

टिप्पणियाँ

पड़ी। वहाँ दृष्टान्त है। धेनु लोक प्रसिद्ध गाय बछड़े के बिना नहीं रहती है बछड़े के साथ ही सोती है वैसे ही यह वृत्रमाता है।

सरलार्थ – अपमानित वृत्रमाता अपने पुत्र की रक्षा के लिए अपने हाथ को फैलाया। तब इन्द्र ने अपने अस्त्र से प्रहार किया। उसी समय वृत्रमाता मृत्यु को प्राप्त हुई। यहाँ उदाहरण दिया जाता है की जैसे बछड़े सहित गाय सोती है वैसे ही मृत वृत्र भी अपनी माता सहित सोया था।

व्याकरण

- **नीचावया:** – वेति खादति इस अर्थ में वे-धातु से असिप्रत्यय करने पर वयस् यह हुआ, उसके बाद नीचौ वयसौ यस्या: सा नीचवया: यहाँ पर बहुव्रीहिसमास है, छन्द में दीर्घ है।
- **वृत्रपुत्रा** – वृत्र: पुत्र: यस्या: सा यहाँ पर बहुव्रीहिसमास है।
- **वध:** – जिससे मारा जाता है उसे वध कहते है। हन को वध आदेश।
- **सू:** – षूङ् प्राणिगर्भविमोचने इस धातु से क्विप करने पर सू: यह रूप बनता है।
- **दानु:** – दो अवखण्डने इस धातु से नुप्रत्यय करने पर दानु: यह रूप बनता है।
- **जभार** – भृधातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।

अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम्।
वृत्रस्य निण्यं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम आशयदिन्द्रशत्रुः॥१०॥

पदपाठ – **अतिष्ठन्तीनाम्। अनिऽवेशनानाम्। काष्ठानाम्। मध्ये। निऽहितम्। शरीरम् ॥ वृत्रस्य। निण्यम्। वि। चरन्ति। आपः। दीर्घम्। तमः। आ। अशयत्। इन्द्रऽशत्रुः॥१०॥**

अन्वय: – अतिष्ठन्तीनाम् अनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं वृत्रस्य निण्यं शरीरम् आप:विचरन्ति। इन्द्रऽशत्रु: दीर्घं तम आ अशयत्।

व्याख्या – वृत्र का जल रूपी शरीर विचरण करता रहता है जल धाराएं विविध रूप होकर बहती है। किस प्रकार का शरीर मृत रूप से बेनाम निशान होकर। जल में मग्न होने से उसका कोई नाम नहीं जानता है। यह ही स्पष्ट करते हैं। वाष्प रूप जल के मध्य में गुप्त रूप से रहता है। किस प्रकार का वाष्प जल। जो स्थिर नहीं रहता कहीं पर भी आसन रूप से स्थिर नहीं होने वाला बहने के स्वभाव से इनकी घुमने फिरने वाले मनुष्य के समान कोई भी स्थिर स्थिति सम्भव नहीं है। इन्द्र का शत्रु वृत्र जल के मध्य में अपने शरीर को लम्बे समय के लिए फैंक देता है, दीर्घअन्धकार के समान, दीर्घ निद्रात्मक मरण जैसा होता है, वैसे ही अपने शरीर को गिरा देता है।

सरलार्थ – किसी निश्चित स्थान के रहित जल के मध्य में गिरे हुए नामरहित वृत्र के शरीर को जल अतिक्रमण करता है। इन्द्र के द्वारा मारा गया वृत्र अनन्त होकर के गिरता है।

व्याकरण

- **अतिष्ठन्तीनाम्** – स्थाधातु से शतृप्रत्यय करने पर ङीप् होकर तिष्ठन्ति यह रूप बनता है। वहाँ पर न तिष्ठन्तीति नञ्तत्पुरुषसमास में षष्ठीबहुवचन में अतिष्ठन्ति नाम यह रूप है।
- **अनिवेशनानाम्** – निपूर्वक विश्–धातु से ल्युट् अन् आदेश होने पर निवेशनम यह हुआ उसके बाद न निवेशनम यहाँ पर नञ् तत्पुरुष समास में षष्ठीबहुवचन में अनिवेशनानाम् यह रूप बनता है।
- **निहितम्** – निपूर्वक धा–धातु से क्तप्रत्यय करने पर निहितम् यह रूप बनता है।
- **काष्ठानाम्** – क्रान्त्वा स्थिता इस अर्थ में क्रम पूर्वक स्था–धातु से क्विप करने पर काष्ठा हुआ षष्ठीबहुवचन में काष्ठानाम यह रूप हुआ।

पाठगत प्रश्न 16.2

1. इन्द्रशत्रु: इसका विग्रह क्या है?
2. रुजाना: इसका क्या अर्थ है?
3. वध्रि: इसका क्या अर्थ है?
4. किस प्रकार के वृत्र ने इन्द्र को युद्ध के लिए ललकारा?
5. पत्सुत:शी इस रूप कोसिद्ध करो?
6. नीचावया: इसका क्या अर्थ है?
7. दानु: इसका क्या अर्थ है?
8. सू: यहाँ पर धातु क्या है?
9. निवेशनम् यहाँ पर किस अर्थ में ल्युट् हुआ?
10. महिना इसका लौकिकरूप क्या है?

16.1.3 अब इन्द्रसूक्त के मूलपाठ को जानेंगे

दासपत्नीरहिंगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।
अपां बिलमपिहितं यदासीद्वृत्रं जघन्वाँ अप तद्ववार॥११॥

पदपाठ – दासऽपत्नीः। अहिंऽगोपाः। अतिष्ठन्। निऽरुद्धाः। आपः। पणिनाऽइव। गावः ॥ अपाम्। बिलम्। अपिऽहितम्। यत्। आसीत्। वृत्रम्। जघन्वान्। अप। तत्। ववार॥११॥

टिप्पणियाँ

अन्वय – दासपत्नीः अहिगोपा आपः पणिना गावः इव निरुद्धाः अतिष्ठन्, वृत्रं जघन्वान्। अपां यत् बिलम् अपिहितम् आसीत्, तत् अपववार ।।११।।

व्याख्या – जिस प्रकार पणी नामक असुर ने गायों को गुफा में बंद कर दिया था, उसी प्रकार वृत्र द्वारा रक्षित उसकी जल रूपी पत्नियां भी निरुद्ध थी जल बहने का मार्ग भी रुका हुआ था, इन्द्र ने वृत्र को मारकर वह द्वार खोला। जल को स्वच्छन्द रूप से बहने नहीं दिया अर्थात उसका निरोध किया। यहाँ पर यह ही स्पष्ट किया गया है की जल निरुद्ध था।जल को भी मेघ ने रोक दिया तब इन्द्र ने वृत्र को मारकर उसे मुक्त किया।

सरलार्थ – स्वामी मेघ के द्वारा रक्षित जल वृत्र के द्वारा रोका गया जैसे पणिनाम के राक्षसगण ने गायों को छुपाया था। इन्द्र ने वृत्र को मारकर जलप्रवाह के बन्द दरवाजों को खोल दिया।

व्याकरण

- **दासपत्नीः** – दासः पतिः यासां ताः दासपत्नीः यहाँ बहुव्रीहिसमास है। दासयति इस अर्थ में घञ् करने पर दास शब्द बनता है।
- **अहिगोपाः** – अहिः गोपाः यासां ताः अहिगोपाः यहाँ पर बहुव्रीहि समास है।
- **निरुद्धाः** – निपूर्वकरुध्-धातु से क्तप्रत्यय करने पर प्रथमाबहुवचन में निरुद्धाः बना।
- **अपिहितम्** – अपिपूर्वक धा धातु से क्तप्रत्यय करने पर अपिहितिम् बना।
- **जघन्वान्** – हन्-धातु से लिट् अर्थ में क्वसुन्प्रत्यय करने पर प्रथमपुरुष एकवचन में जघन्वान् यह रूप है।
- **आसीत्** – अस्-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में आसीत् यह रूप है।
- **अतिष्ठन्** – स्था धातु से लङ् प्रथमपुरुष बहुवचन में अतिष्ठन् यह रूप है।
- **अपववार** – अपपूर्वक वृ-धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।
अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्॥१२॥

पदपाठ – अश्व्यः। वारः। अभवः। तत्। इन्द्र। सृके। यत्। त्वा। प्रतिऽअहन्। देवः। एकः ।।अजयः। गाः। अजयः। शूर। सोमम्। अव। असृजः। सर्तवे। सप्त। सिन्धून् ।।१२।।

अन्वय – देवः एकः यत् त्वा सृके प्रत्यहन् तत् इन्द्र, अश्व्यः वारः अभवः। शूर, गाः अजयः सोमम् अजयः। सर्तवे सप्त सिन्धून् अवासृजः।

व्याख्या – हे इन्द्र सभी आयुध में कुशल एक अद्वितीय वृत्र ने जब तुम्हारे ऊपर प्रहार किया था, उस समय तुम घोड़े की पूंछ के समान घूमकर उस प्रहार से बच गए थे। जैसे घोड़े की पूंछ

के बाल मक्खी आदि को हटाने के लिए इधर उधर होती है, वैसे ही तुम ने भी वृत्रगण का निराकरण किया यह अर्थ है। और हे शूर गायों का हरण करने वाले पणिनाम के राक्षसों को जीत लिया। हे शूर शौर्य युक्त इन्द्र ने अजय सोम को जीत लिया। और तैत्तिरीय में कहा गया 'त्वष्टा हतपुत्रः' इस उपाख्यान में कहा गया है – 'स यज्ञवेशसं कृत्वा प्रासहा सोममपिबत्' (तैः – २.४.१२.१) इति। सप्त सिन्धून् 'इमं मे गङ्गे' (ऋ – सं – १०.७५.१) इन ऋचाओं में गङ्गा आदि सात नदियों का प्रवाह बाधाहीन कर दिया। वृत्र के द्वारा किये गये प्रवाहनिरोध का निराकरण किया यह अर्थ है।

सरलार्थ – इस मन्त्र में इन्द्र के प्रति कहा गया है की हे इन्द्र जब अद्वितीय प्रकाशमान वृत्र ने प्रहार किया तब तुम घोडे की पूंछ के समान हो गये। हे शौर्य सम्पन्न इन्द्र! यौम ने गायों को चुराने वालों को जीता, सोम को जीता, और सात नदियों को बंधन से मुक्त किया।

व्याकरण

- **अश्व्यः** – अश्वे भवः इस अर्थ में भवेच्छन्दसि इस सूत्र से यत् करने पर प्रथमा एकवचन में अश्व्यः यह रूप है।
- **वारः** – वारयति इस अर्थ में वृ–धातु से णिच् अच् करने पर प्रथमा एकवचन में वारः रूप है।
- **सर्तवे** – सृ–धातु से तुमर्थ में तवेन्प्रत्यय करने पर सर्तवे यह रूप है।
- **अभवः** – भूधातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में अभवः यह रूप है।
- **प्रत्यह्न** – प्रतिपूर्वक ह्न–धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **असृजः** – सृज्–धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में रूप है।
- **अजयः** – जी–धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में रूप है।

नास्मै विद्युन्न तंन्यतुः सिषेध न यां मिहमकिरद्ध्रादुनिं च।
इन्द्रश्च यद्युयुधाते अहिश्चोतापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये ॥१३॥

पदपाठ- न। अस्मै। विऽद्युत्। न। तन्यतुः। सिषेध। न। याम्। मिहम्। अकिरत्। ह्रादुनिम्। च ।इन्द्रः। च। यत्। युयुधाते इति। अहिः। च। उत। अपरीभ्यः। मघवा। वि। जिग्ये ॥१३॥

अन्वय – यत् इन्द्रः अहिः च युयुधाते अस्मै विद्युत् न सिषेध, न तन्यतुः, यां मिहं ह्रादुनिं च न अकिरत्। उत मघवा अपरीभ्यः विजिग्ये।

व्याख्या – इन्द्र को रोकने के लिये वृत्र ने जिस माया से विद्युत आदि का निर्माण किया वे भी इन्द्र को रोक नहीं सके। यह ही अर्थ इस मन्त्र के द्वारा कहते हैं। इस इन्द्र के लिए निर्मित विद्युत् इन्द्र को पाश में बाँधने में असमर्थ हुई। तथा भंयकर गर्जना करने वाले मेघ को वृत्र ने इन्द्र पर

टिप्पणियाँ

छोड़ दिया वह भी इन्द्र को नहीं रोक सका। जल वर्षा और अशनि का प्रयोग किया वह भी इन्द्र को नहीं रोक सके। इन्द्र और अहि ने इन्द्र और वृत्र दोनों ने जब युद्ध किया। उस समय विद्युत आदि प्राप्त नहीं हुए। और भी शक्तिशाली धनवान इन्द्र ने वृत्र के साथ उसके द्वारा अन्यनिर्मित माया को भी विशेष रूप से जीत लिया।

सरलार्थ – इन्द्र को मारने के लिए जब शक्ति का वृत्र के द्वारा प्रयोग की गई वह सभी विफल हुई। उसका ही वर्णन इस मन्त्र में किया गया है। जब इन्द्रवृत्र के मध्य में युद्धचल रहा था, तब वृत्र के द्वारा माया से जो विद्युत् प्रयुक्त की गई वह इन्द्र की ओर नहीं गई, गर्जना उसकी ओर नहीं गई, वृत्र के द्वारा प्रेरित वर्षा और वज्र भी इन्द्र की ओर नहीं गया। परन्तु ऐश्वर्यवान् इन्द्र ने भिन्न माया से वृत्र को जीत लिया।

व्याकरण

- **विद्युत्** – विशेषेण द्योत्यते इस अर्थ में विपूर्वक द्युद्–धातु से क्विप करने पर विद्युत् यह रूप है।
- **सिषेध** – षिध्–धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में सिषेध यह रूप है।
- **मिहम्** – मिह्–धातु से क्विप् करने पर द्वितीया एकवचन में मिहम् यह रूप है।
- **अकिरत्** – कृ–धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन में अकिरत् यह रूप है।
- **युयुधाते** – युध्–धातु से आत्मनेपद में क्विप लिट् प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।
- **विजिग्ये** – विपूर्वक जि–धातु से आत्मनेपद लिट् प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।

अहेर्यातारं कमपश्य इन्द्र हृदि यत्ते जघ्नुषो भीरगच्छत्।
नव च यन्नवतिं च स्रवन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि ॥१४॥

पदपाठ – अहेः। यातारम्। कम्। अपश्यः। इन्द्र। हृदि। यत्। ते। जघ्नुषः। भीः। अगच्छत्॥ नव। च। यत्। नवतिम्। च। स्रवन्तीः। श्येनः। न। भीतः। अतरः। रजांसि ॥१४॥

अन्वय – इन्द्र! अहेः कम् यातारम् अपश्यः, यत् जघ्नुषः ते हृदि भीः अगच्छत्, यत् श्येनः न नव च नवतिं च स्रवन्तीः रजांसि अतरः ॥१४॥

व्याख्या – हे इन्द्र जब तुमने वृत्र को मारा उस समय तुम्हारे हृदय चित्त में कोई भी भय नहीं था उस समय तुमने सहायक के रूप में किसी भी वृत्रहन्ता को नहीं देखा तुम्हारे अतिरिक्त कोई भी पुरुष ऐसा करने में असमर्थ था। उस प्रकार के पुरुष को मारने में तुम्हे कोई भय नहीं था यह अर्थ है। तुम निडर बाज के समान निन्यानवें नदियों को पार करके चले गए। वहाँ दृष्टान्त है। बाज़ नाम का बलवान पक्षी अत्यन्त दूर जाने के लिए भयभीत नहीं होता है। उसी प्रकार तुमने वृत्र को मारकर बिना भय के चले गए। और ब्राह्मण ग्रंथो में कहा गया है – 'इन्द्रो वै वृत्रं हत्वा

नास्तृषीति मन्यमानः पराः परावतोऽगच्छत्' (ऐतरेयब्राह्मणे - ३.१५) इति। और तैत्तिरीय में भी कहा गया है - 'इन्द्रो वृत्रं हत्वा परां परावतमगच्छदपाराधमिति मन्यमानः' (तै - सं - २.५.३.६) इति।

सरलार्थ - यहाँ पर इन्द्र के प्रति कहते है की हे इन्द्र वृत्र का कोई सहायक नहीं देखा गया जिससे तुम्हारा हृदयवृत्र को मारने से भयभीत हो जाए। जिस प्रकार बाज पक्षी भय से रहित होकर दूर तक जाता है उसी प्रकार तुमने वृत्र को मारकर निडर होकर के निन्यानवें नदियों के पार चले गये।

व्याकरण

- **यातारम्** -या धातु तृच् करने पर द्वितीया एकवचन में रूप है।
- **अपश्यः** - दृश्-धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में अपश्यः यह रूप है।
- **जघ्नुषः** - हन्-धातु से क्वसु प्रत्यय करने पर जघन्वस् यह हुआ उसके बाद षष्ठी एकवचन में जघ्नुषः रूप बना।
- **अगच्छत्** - गम्-धातु से लङ् प्रथमपुरुष एकवचन का रूप है।
- **स्रवन्तीः** - स्रु-धातु से शतृप्रत्यय करने पर ङीप् द्वितीया बहुवचन में स्रवन्तीः यह रूप है।
- **भीतः** - भीधातु से क्तप्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में भीतः यह रूप है।
- **अतरः** - तध्-धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन का रूप है।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।
सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव ॥१५॥

पदपाठ - इद्रः। यातः। अवऽसितस्य। राजा। शमस्य। च। शृङ्गिणः। वज्रबाहुः ॥ सः। इत्। ॐ इति। राजा। क्षयति। चर्षणीनाम्। अरान्। न। नेमिः। परि। ता। बभूव ॥१५॥

अन्वय - वज्रबाहुः इन्द्रः यातः अवसितस्य शमस्य शृङ्गिणः च राजा। स इत् उ चर्षणीनां राजा क्षयति। नेमिः अरान् न ता परिबभूव ॥१५॥

व्याख्या - वज्रबाहु इन्द्र ने शत्रुओं को मारकर स्थावर, जंगम, सींग रहित और सींग धारी पशुओं के स्वामी बने अथवा राजा बनें। और वह इन्द्र ही मनुष्यों का राजा बनकर के निवास किया। ऊपर कहे गए सभी जीवों के चारों और व्याप्त होकर के रहता है। वहाँ पर उदाहरण है। जिस प्रकार पहिए के अरे नेमी में स्थित रहते है उसी प्रकार इंद्र ने सबको धारण किया।

सरलार्थ - इस मन्त्र में इन्द्र की स्तुति की गई है की वज्रधारी इन्द्र ने स्थाव, जङ्गम शान्त प्राणियों और सींग धारी प्राणियों का राजा है। वह ही मनुष्यों का सम्राट् होकर के निवास करता हुआ

टिप्पणियाँ

उनकी रक्षा भी करता है। किस प्रकार रक्षा करता है। कहते हैं की जिस प्रकार अरे रथचक्र की रक्षा करता है उसी प्रकार राजा भी मनुष्यों की रक्षा करता है।

व्याकरण

- **यात:** – या-धातु से क्विप तुक् आगम होने पर यातृ यह रूप बना। उसका षष्ठी एकवचन में यात: यह रूप बना।
- **अवसितस्य** – अवपूर्वक साधातु से क्तप्रत्यय करने पर अवसित यह रूप बना। उसका षष्ठी एकवचन में अवसितस्य यह रूप बना।
- **शृङ्गिण:** – शृङ्गशब्द से इनप्रत्यय करने पर शृङ्गिन् यह हुआ उसका षष्ठी एकवचन में शृङ्गिण: यह रूप बना।
- **क्षयति** – क्षि-धातु से लट् प्रथमपुरुष एकवचन में क्षयति यह रूप बना।
- **परिबभूव** – परि पूर्वक भू धातु से लिट् प्रथमपुरुष एकवचन में परिबभूव यह रूप बना।

पाठगत प्रश्न 16.3

1. पणिनाम असुर ने गायों को छुपाकर के क्या किया?
2. अकिरत् यहाँ पर किस सूत्र से इकार हुआ?
3. जिग्ये यहाँ पर किस सूत्र से अभ्यास से उत्तर अकार कको कुत्व हुआ?
4. जघ्नुष: यह रूप कैसे बना?
5. सर्तवे यहाँ पर किससे आद्युदात्त हुआ?
6. यातारम् यहाँ पर धातु क्या है?
7. यातारम् इसका क्या अर्थ है?
8. अश्व्य: किस सूत्र से यत्प्रत्यय हुआ?
9. अतर: यह किस धातु का किस लकार में रूप है?
10. श्येन पक्षी के साथ किसकी तुलना की?

16.2 इन्द्र का स्वरूप।

वेद में अन्तरिक्ष स्थानीय सर्वश्रेष्ठ देव इन्द्र हैं। लौकिक मनुष्यों के समान उसके भी हाथ पैर शिर-इत्यादि का यहाँ पर वर्णन किया गया है। उसका उदर सोमरस से परिपूर्ण सरोवर के समान है। इन्द्र का प्रिय पेयसोम है, अत: वह सोमपा कहलाता है। जन्मदिन के आरम्भ से ही इसकी माता ने सोमरस इनको पिलाया था। यह सोमरस में ऐसे आसक्त थे की एक बार सोम के लिए

चोरी भी की। सोमपान के बाद इन्द्र महान कार्य भी अनायास से ही सिद्ध कर देते है। वृत्र युद्ध के समय में इन्द्र ने सोमपूर्ण तीन सरोवर को रिक्त कर दिया था।

इन्द्र का मुख्य अस्त्र वज्र है, उसका निर्माता त्वष्टा कहलाता है। वज्र को धारण करने से ही यह देव इन्द्र वज्रिन्, वज्रबाहु, वज्रहस्त-इत्यादिनाम से जाना जाता है। इन्द्र का जन्म अस्वाभाविकरूप से हुआ ऐसा ऋग्वेद में वर्णन है। जन्मसमय में वह अपनी माता को मारकर उसकी भुजाओं के मूल से बाहर आना चाहता था। जन्म के बाद ही इसने अपना अपूर्व पराक्रम को दिखाया। इसके पराक्रम से पृथिवी आकाश में कम्पन हुआ और देव भी भयभीत हुए। वैसे भी -

यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत्।
यस्य सुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः॥

- (ऋग्वेद॥२.१२.१)

ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में जो विराट् पुरुष का वर्णन प्राप्त हुआ, उसके मुख से इन्द्र उत्पन्न हुआ ऐसा पुरुषसूक्त से जाना जाता है।

मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च, प्राणाद्वायुरजायत॥

- (ऋग्वेद॥१०.९०.१३)

इन्द्र का भोजन बैल का मांस है। अग्नि के द्वारा पका हुआ तीस भैसों का मांस भी इसके भोजन के रूप में उसका वर्णन प्राप्त होता है। इन्द्र का सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से अथवा परोक्षरूप से सभी देवों के साथ है। मरुत् इन्द्र का मित्र है। मरुत् हमेशा इन्द्र की युद्ध में सहायता करता है, अतः इन्द्र मरुत्सखा मरुत्वान् इत्यादिनाम से भी जाना जाता है। सूक्त में अग्नि के साथ इन्द्र की भी स्तुति प्राप्त होती है। विष्णु-वरुण-वायु-वृहस्पति-इत्यादि के साथ भी इन्द्र की स्तुति दिखाई देता है। इन्द्र की पत्नी शची थी जो शक्ति का प्रतीक कहलाती है। अग्नि इन्द्र का जुड़वाँ भाई कहलाता है। पूषा भी इसका भाई कहलाता हैं। इसके पिता द्यौ है। इन्द्र हाथ में हमेशा सुनहरे अथवा रक्तिम वस्त्र को धारण करते हैं। इसका रथ तथा घोड़े का निर्माता ऋभु हैं। यह इन्द्र अस्त्रों के मध्य-मध्य में बाण को भी धारण करता है।

इन्द्र की महानता बहुत ही विशाल है। द्युलोक-अन्तरिक्षलोक-पृथ्वीलोक मिलकर के भी उतना यश प्राप्त नहीं कर सकते जितना यश इन्द्र का है। इन्द्र ने कम्पन इस पृथिवी को स्थिर किया, उड़ते हुए पर्वत को भी स्थिर किया, आकाश और पृथिवी को विस्तृत करती है। इन्होने ही वृत्र को मारा, इसलिए यह वृत्रघ्न, वृत्रहा इत्यादिनाम से भी जाने जाते हैं। इन्होंने ही पणिगण को मारकर गायों को छुड़ाया। इसी के अधीन ही सभी घोड़े, गाय रथ और दिशा है। यह इन्द्र सूर्य का और उषा का पिता, और जल को बरसाने वाले हैं।

यस्याश्वासः प्रदिशि यस्य गावः, यस्य ग्रामा यस्य विश्वेरथासः।
य सूर्य य उषसं जजान, यो अपां नेता स जनास इन्द्रः॥

- (ऋग्वेद॥२.१२.७)

इन्द्र की सहायता के बिना युद्ध में विजय प्राप्त करना असम्भव है, अतः युद्ध में योद्धा इसी का ही आवाहन करते है। इन्द्र ने ही दो पत्थरों के टुकड़ों से अग्नि को उत्पन्न किया।

इस प्रकार इन्द्र का लाभ होने पर भी उसका प्रकृत स्वरूप विषय में मतभेद है। यह इन्द्र कौन है इस विषय में जैसे हमारे देश के विद्वानों में संदेह है, वैसे ही विदेशी विद्वानों में भी अत्यधिक सन्देह विद्यमान है।

16.3 इन्द्रसूक्त का सार

इन्द्र ऋग्वेद का सबसे अधिक लोकप्रिय देव है। निरुक्तकर्ता यास्क के अनुसार इन्द्र अन्तरीक्ष स्थानीय देव है। इस इन्द्रसूक्त में इन्द्र के शौर्ययुक्त कार्यों का वर्णन है। वह मेघ को मारकर जल को भूमि पर गिराता है, तथा पर्वतों के मध्य में नदी को प्रवाहित करता है। पर्वत में स्थित मेघों को पीटने के लिए त्वष्टा ने इन्द्र के लिये गर्जना युक्त वज्र का निर्माण किया। उस वज्र के द्वारा मेघ के भिन्न होने पर गाय जैसे अपने बछड़े की और भागती है, वैसे ही जल भी अपने वेगसहित नीचे समुद्र की ओर जाना प्रारम्भ करती है। बैल के समान आचरण करते हुए इन्द्र में त्रिकद्रुक संज्ञकयाग में अभिषिक्त सोम को पिया। उसने वज्र को स्वीकार करके मेघो के प्रथम मेघ को मारा। मेघों के प्रथम मेघ को जब मारा, उसके बाद माया से युक्त असुरों की माया को भी मारा था। तब सूर्य और उषा को उत्पन्न करके किसी भी शत्रु को प्राप्त नहीं किया है। इन्द्र ने राक्षसों में प्रथम वृत्रासुर का आवाहन किया। उस वृत्र को तथा उससे अधिक शक्तिशाली राक्षस का नाश किया। कुल्हाड़ी से छिन्न वृक्षशाखा के समान वृत्रासुर को पृथिवी की गोद में उसको गिराया। अभिमान में आकर के वृत्र ने इन्द्र को युद्ध में आमन्त्रित किया। इन्द्र ने वज्र से वृत्र के हाथ पैर को काट दिया। उस वृत्र ने भी इन्द्र के साथ युद्ध में प्रवर्तित हुआ। उस इन्द्र ने उसके कन्धे के ऊपर वज्र से प्रहार किया। इस प्रकार से वृत्र को इन्द्र ने मारा। वर्षाकाल में जल जैसे नदी का उल्लंघन करके सभी और फैल जाता है, वैसे ही वृत्र के द्वारा रोका गया जलवृत्र का उल्लङ्घन करके सभी और फैल गया। वृत्र की माता जब अपने पुत्र की रक्षा के लिए प्रयत्न किया तब वह भी इन्द्र के द्वारा मारी गई। इस प्रकार से जल उसके शरीर को व्याप्त किया।वृत्र को मारकर इन्द्र ने बन्द जलमार्ग को खोल दिया। आदि में वृत्र से प्रहार करने पर इन्द्र में भय से देवो के घोड़े की पुच्छतुल्य हुए। परन्तु बाद में इन्द्र ने सोम को जीतकर, तथा सात नदियों के जल को मुक्त किया। वृत्र के द्वारा सृजित विद्युत् मेघ अथवा वज्रइन्द्र को रोकने में समर्थ नहीं हुए। और भयभीत होकर के निन्यानवे (९९) नदियों को और अन्तरिक्ष को बाज की तरह तैरकर चली गई। वज्रधारी वह सभी राजाओं का, सभी मनुष्यों का शासक हुए। जैसा आरा रथचक्र की रक्षा करता है, वैस ही सभी का राजा इन्द्र हमारी रक्षा करो।

पाठ का सार

ऋग्वेद के प्रथममण्डल में विद्यमान इन्द्रसूक्त में पन्द्रह मन्त्र हैं। वहाँ प्रथम मन्त्र में इन्द्र के पराक्रम युक्त कार्य के विषय में कहा गया है। जैसे मेघ को मारना, वर्षा करना इत्यादि। द्वितीय मन्त्र में

विश्वकर्मा गर्जना युक्त वज्र का निर्माण किया। उस मेघ से भिन्न जल समुद्र की ओर गया। तृतीय मन्त्र में इन्द्र का सोमपान विषय में कहा गया है। चतुर्थ मन्त्र में इन्द्र से उत्पन्न किया हुआ इस विषय में कहा गया है। इन्द्र ने कपटी असुरों को मारा, सूर्य उषःकाल और आकाश को उत्पन्न किया। पञ्चम मन्त्र में कहा की इन्द्र ने बड़े वज्र से वृत्र को मारा। षष्ठ मन्त्र में कहा की मिथ्याभिमानी वृत्र ने यद्यपि इन्द्र को युद्ध के लिए आवाहन किया, फिर भी स्वयं ही इन्द्र से मारा गया है। सप्तम मन्त्र में वृत्र का युद्ध के बाद क्या क्या हुआ यह दिखाया गया। वहाँ पर हाथ रहित और पैर से रहित वृत्र को इन्द्र ने मारा। और वृत्र भूमि पर गिरा। इसी प्रकार अष्टम मन्त्र में कहा गया की इन्द्र ने युद्ध के बाद क्या कार्य किया। नौवें मन्त्र में वृत्र की माता कैसे मृत्यु को प्राप्त हुई इस विषय में कहा गया। दसवें मन्त्र में युद्ध के बाद वृत्र का क्या हुआ इस विषय में कहा गया।

एकादश मन्त्र में इन्द्र ने वृत्र द्वारा अवरुद्ध किये जल को कैसे प्रकाशित किया इस विषय में कहा गया है। द्वादश मन्त्र में कहा की इन्द्र ने गाय, सोम, प्रवहित नदी को मुक्त किया। त्रयोदश मन्त्र में इन्द्र वृत्र के युद्धविषय में कहा गया। वहाँ इन्द्र ने वृत्र पर कैसे विजय प्राप्त की यह भी बताया। चतुर्दश मन्त्र में इन्द्र के भयविषय में कहा। परन्तु यह किसी अनुयायी का मत है। पञ्चदश मन्त्र में इन्द्र का स्वामी भाव को प्रकट किया। और प्राणियों के लिए उसके कर्तव्य भी प्रकाशित किये। इस प्रकार सम्पूर्ण इन्द्रसूक्त में इन्द्र का पराक्रम, इन्द्र वृत्र का युद्ध, और इन्द्र की महानता का वर्णन किया।

पाठांत प्रश्न

1. इन्द्रसूक्त का सार लिखो।
2. इन्द्र का पराक्रम युक्त कार्यों का वर्णन करो।
3. अपादहस्तो अपृतन्यदित्यादिमन्त्र को पूर्ण करके सायणभाष्य के अनुसार व्याख्या करो।
4. इन्द्रस्य स्वामित्वम् इन्द्रो यतोवसितस्य... इत्यादि मन्त्र के अनुसार से व्याख्या करो।
5. कथं वृत्रं वृत्रमातरं च इन्द्रः हतवान् इसकी मन्त्र के अनुसार से व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1

1. हिरण्यस्तूप ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, और इन्द्र देवता है।
2. मेघ को मारा।

3. पर्वतो की संबन्धि प्रवहणशीला नदियों को दो तटो द्वारा प्रवाहित किया।
4. गर्जना करना।
5. आश्रित।
6. बैल के समान आचरण करना।
7. अच्छी प्रकार से नाश किया।
8. विपूर्वक व्रश्च् धातु से क्तप्रत्यय करने परविवृक्ण यह रुप है। उसका प्रथमा बहुवचन में वैदिक रूप विवृक्णा है।
9. वधः येन स वधः।
10. विशेष रूप से छिन्न।

16.2

1. इन्द्रः शत्रुर्घातको यस्य सः।
2. अपनी अति पीड़ित सेना प्रजा को।
3. बन्धे हुए बैल के समान निर्बल पुरुष।
4. हाथ पैर से रहित।
5. पादेषु इस अर्थ में पाद शब्द को पद आदेश होने पर पत्सु यह हुआ इसके होने पर सप्तमी अर्थ में तसिल्प्रत्यय करने पर विभक्तिलोप अभाव में पत्सुतः यह रूप हुआ। पत्सुतः शेते इस अर्थ में क्विप करने पर पत्सुतःशीः यह रूप है।
6. जल को नीचे गिरा देती है।
7. वह सेना खण्डित बल होकर।
8. षूञ् प्राणिगर्भविमोचने धातु है।
9. अधिकरण अर्थ में।
10. महिम्ना लौकिक रूप है।

16.3

1. गुफा में ले जाकर के गुफा का द्वार बन्द कर दिया।
2. घ्त इद्–धातोः से।

3. सन्लिटोर्जेः से।

4. हन्-धातु से क्वसु प्रत्यय करने पर जघन्वस् इसका षष्ठी एकवचन में।

5. नित्त्व होने से।

6. यर् धातु।

7. मारना।

8. भवे छन्दसि।

9. तध्-धातु से लङ् मध्यमपुरुष एकवचन में।

10. इन्द्र की।

॥ सोलहवां पाठ समाप्त ॥